

# Research Vidyapith International Multidisciplinary Journal

(International Open Access, Peer-reviewed & Refereed Journal)

(Multidisciplinary, Monthly, Multilanguage)

\* Vol-3\* \*Issue-1\* \*January 2026\*



www.researchvidyapith.com

ISSN (Online): 3048-7331

## NEP 2020 के संदर्भ में पुस्तकालयों की भूमिका

शशि कुमार

पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान, शोधार्थी/पुस्तकालयाध्यक्ष, रामगुलाम इंस्टिट्यूट ऑफ हायर एजुकेशन रिसर्च  
एण्ड टेक्नोलॉजी

Article Info: (Received- 19/11/2025, Accept- 16/12/2025, Published- 10/01/2026)

DOI- 10.70650/rvimj.2026v3i10019

### सारांश—

National Education Policy 2020 भारत की शिक्षा व्यवस्था को आधुनिक, समावेशी और गुणवत्तापूर्ण बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। इस नीति का मुख्य उद्देश्य शिक्षा को बहुविषयक, कौशल-आधारित और प्रौद्योगिकी-संपन्न बनाना है। इस संदर्भ में पुस्तकालयों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है, क्योंकि वे ज्ञान, सूचना और सीखने के प्रमुख केंद्र हैं। डिजिटल युग में पुस्तकालय केवल पुस्तकों तक सीमित नहीं हैं, बल्कि वे ई-संसाधनों, ऑनलाइन डेटाबेस, और डिजिटल प्लेटफॉर्म के माध्यम से व्यापक ज्ञान प्रदान करते हैं। यह शोध-पत्र NEP 2020 के संदर्भ में पुस्तकालयों की भूमिका, उनकी उपयोगिता, चुनौतियाँ और भविष्य की संभावनाओं का विश्लेषण करता है। अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि पुस्तकालय शिक्षा की गुणवत्ता बढ़ाने, पठन संस्कृति विकसित करने और डिजिटल साक्षरता को प्रोत्साहित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। डिजिटल युग में सूचना का स्वरूप और उसकी उपलब्धता दोनों ही तेजी से परिवर्तित हुए हैं। इंटरनेट, ई-पुस्तकें, ई-जर्नल, ऑनलाइन डेटाबेस, ओपन एजुकेशनल रिसोर्सेज और डिजिटल रिपॉजिटरी जैसे माध्यमों ने ज्ञान को वैश्विक स्तर पर सुलभ बना दिया है। इस परिवेश में पुस्तकालय पारंपरिक "पुस्तक-केन्द्रित" संस्थान से विकसित होकर "डिजिटल और उपयोगकर्ता-केन्द्रित ज्ञान केंद्र" के रूप में उभरे हैं। NEP 2020 इस परिवर्तन को स्वीकार करते हुए पुस्तकालयों को शिक्षा प्रणाली का सक्रिय और अनिवार्य घटक मानती है। इस नीति के अनुसार, पुस्तकालय केवल सहायक संसाधन नहीं हैं, बल्कि वे छात्रों में पठन संस्कृति विकसित करने, स्व-अध्ययन को प्रोत्साहित करने और जीवनपर्यंत सीखने की प्रवृत्ति को बढ़ावा देने में केंद्रीय भूमिका निभाते हैं।

इस अध्ययन में यह स्पष्ट किया गया है कि NEP 2020 के उद्देश्यों जैसे बहुविषयक शिक्षा, कौशल विकास, डिजिटल साक्षरता और समावेशी शिक्षा की प्राप्ति में पुस्तकालय महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। पुस्तकालय विभिन्न विषयों की सामग्री उपलब्ध कराकर छात्रों को व्यापक और गहन ज्ञान प्रदान करते हैं, जिससे वे किसी एक विषय तक सीमित न रहकर बहुविषयक दृष्टिकोण विकसित कर सकें। इसके अतिरिक्त, पुस्तकालय डिजिटल संसाधनों और तकनीकी उपकरणों के माध्यम से छात्रों को डिजिटल साक्षर बनाते हैं, जो आज के समय की एक अनिवार्य आवश्यकता है। पुस्तकालयों की एक प्रमुख भूमिका पठन संस्कृति को विकसित करना है, जिस पर NEP 2020 में विशेष बल दिया गया है। प्रारंभिक स्तर से ही छात्रों में पढ़ने की आदत विकसित करना उनकी भाषा क्षमता, तार्किक सोच और रचनात्मकता को बढ़ाने में सहायक होता है। इस दिशा में विद्यालय पुस्तकालय, कहानी सत्र, पठन अभियान और पुस्तक प्रदर्शनी जैसे कार्यक्रम अत्यंत प्रभावी सिद्ध होते हैं।

शोध और नवाचार के क्षेत्र में भी पुस्तकालयों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। उच्च शिक्षा संस्थानों में पुस्तकालय शोधार्थियों को आवश्यक सामग्री, ई-जर्नल, डेटाबेस और संदर्भ स्रोत उपलब्ध कराते हैं। इसके साथ ही, वे शोध नैतिकता, उद्धरण शैली, और प्लेगारिज्म से बचाव के बारे में मार्गदर्शन भी प्रदान करते हैं। इस प्रकार, पुस्तकालय शिक्षा और अनुसंधान की गुणवत्ता को बढ़ाने में सहायक होते हैं।

हालाँकि, NEP 2020 के उद्देश्यों को पूरा करने में पुस्तकालयों के सामने कई चुनौतियाँ भी हैं। इनमें डिजिटल

अवसंरचना की कमी, वित्तीय संसाधनों का अभाव, प्रशिक्षित पुस्तकालयाध्यक्षों की कमी, तथा ग्रामीण और दूरदराज क्षेत्रों में तकनीकी सुविधाओं की सीमित उपलब्धता शामिल हैं। इन चुनौतियों के कारण पुस्तकालयों की सेवाओं का पूर्ण लाभ सभी तक नहीं पहुँच पाता।

इन समस्याओं के समाधान के लिए अध्ययन में विभिन्न सुझाव प्रस्तुत किए गए हैं, जैसेकृडिजिटल लाइब्रेरी का विस्तार, पुस्तकालयाध्यक्षों के लिए नियमित प्रशिक्षण कार्यक्रम, सरकारी एवं संस्थागत सहयोग, और पब्लिक आधारित सेवाओं का विकास। इसके अतिरिक्त, उपयोगकर्ताओं में डिजिटल साक्षरता और सूचना साक्षरता को बढ़ावा देना भी आवश्यक है, ताकि वे उपलब्ध संसाधनों का प्रभावी उपयोग कर सकें।

भविष्य की दृष्टि से यह अध्ययन इंगित करता है कि पुस्तकालयों की भूमिका और अधिक महत्वपूर्ण होती जाएगी। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, मशीन लर्निंग, क्लाउड कंप्यूटिंग और डेटा एनालिटिक्स जैसी तकनीकों के उपयोग से पुस्तकालय सेवाएँ और अधिक उन्नत और उपयोगकर्ता-अनुकूल बनेंगी। डिजिटल लाइब्रेरी और ऑनलाइन शिक्षा प्लेटफॉर्म के माध्यम से शिक्षा को अधिक सुलभ और व्यापक बनाया जा सकेगा।

अंततः, यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि NEP 2020 के संदर्भ में पुस्तकालय शिक्षा प्रणाली के एक महत्वपूर्ण और अनिवार्य स्तंभ के रूप में उभरकर सामने आए हैं। वे न केवल ज्ञान के स्रोत हैं, बल्कि शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार, पठन संस्कृति के विकास, डिजिटल साक्षरता के प्रसार और समावेशी शिक्षा के लक्ष्य को प्राप्त करने में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। इसलिए यह आवश्यक है कि पुस्तकालयों को सशक्त बनाया जाए, उन्हें आधुनिक तकनीकों से सुसज्जित किया जाए, और उनकी सेवाओं को अधिक प्रभावी एवं व्यापक बनाया जाए, ताकि वे NEP 2020 के उद्देश्यों को सफलतापूर्वक पूरा कर सकें।

### प्रस्तावना—

शिक्षा किसी भी समाज के विकास का आधार होती है। भारत में शिक्षा प्रणाली को अधिक प्रभावी और आधुनिक बनाने के लिए National Education Policy 2020 लागू की गई। यह नीति शिक्षा को अधिक लचीला, समावेशी और छात्र-केंद्रित बनाने पर बल देती है। भारत जैसे विविधतापूर्ण देश में शिक्षा केवल ज्ञान प्राप्त करने का माध्यम नहीं, बल्कि सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक विकास का आधार भी है। बदलते वैश्विक परिदृश्य, तकनीकी प्रगति और ज्ञान-आधारित अर्थव्यवस्था की बढ़ती मांग के कारण शिक्षा प्रणाली में व्यापक सुधार की आवश्यकता महसूस की गई। इसी आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए NEP 2020 को लागू किया गया, जिसका उद्देश्य भारतीय शिक्षा व्यवस्था को अधिक समावेशी, लचीला, बहुविषयक और तकनीकी रूप से सक्षम बनाना है।

NEP 2020 शिक्षा को केवल परीक्षा और अंकों तक सीमित न रखकर उसे जीवन कौशल, रचनात्मकता, आलोचनात्मक सोच और नवाचार से जोड़ने पर बल देती है। यह नीति शिक्षार्थियों को "क्या सीखना है" के साथ-साथ "कैसे सीखना है" पर भी ध्यान केंद्रित करती है। इस दृष्टिकोण में सीखने के संसाधनों का महत्व अत्यधिक बढ़ जाता है, और यहीं पर पुस्तकालयों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है।

पुस्तकालय लंबे समय से ज्ञान के भंडार और शिक्षा के सहायक केंद्र के रूप में कार्य करते आए हैं। परंपरागत रूप से पुस्तकालयों का मुख्य उद्देश्य पुस्तकों का संग्रह, संरक्षण और पाठकों को उपलब्ध कराना था। किंतु डिजिटल युग के आगमन के साथ पुस्तकालयों का स्वरूप और कार्यप्रणाली दोनों में व्यापक परिवर्तन हुआ है। अब पुस्तकालय केवल भौतिक स्थान तक सीमित नहीं हैं, बल्कि वे डिजिटल प्लेटफॉर्म के माध्यम से कहीं भी और कभी भी सुलभ हो गए हैं। इस परिवर्तन ने पुस्तकालयों को "सूचना केंद्र" से आगे बढ़ाकर "ज्ञान केंद्र" के रूप में स्थापित कर दिया है।

NEP 2020 में पुस्तकालयों को शिक्षा प्रणाली के अभिन्न और सक्रिय घटक के रूप में देखा गया है। यह नीति विद्यालयों और उच्च शिक्षण संस्थानों में पुस्तकालयों के सुदृढीकरण पर बल देती है, ताकि छात्र-छात्राओं को गुणवत्तापूर्ण अध्ययन सामग्री और संसाधन आसानी से उपलब्ध हो सकें। विशेष रूप से प्रारंभिक शिक्षा स्तर पर पठन संस्कृति को विकसित करने के लिए पुस्तकालयों की भूमिका को महत्वपूर्ण माना गया है। बच्चों में पढ़ने की आदत विकसित करना उनकी भाषा दक्षता, कल्पनाशक्ति और तार्किक सोच को सुदृढ करता है, जो उनके समग्र विकास के लिए आवश्यक है।

इसके अतिरिक्त, NEP 2020 डिजिटल शिक्षा और सूचना प्रौद्योगिकी के उपयोग को बढ़ावा देती है। इस संदर्भ में पुस्तकालयों की भूमिका और भी महत्वपूर्ण हो जाती है, क्योंकि वे ई-पुस्तकों, ई-जर्नलों, ऑनलाइन डेटाबेस और ओपन एजुकेशनल रिसोर्सज के माध्यम से छात्रों और शिक्षकों को अद्यतन जानकारी प्रदान करते हैं। डिजिटल लाइब्रेरी और ऑनलाइन प्लेटफॉर्म के माध्यम से शिक्षा को अधिक सुलभ और व्यापक बनाया जा सकता है, विशेष रूप से उन क्षेत्रों में जहाँ भौतिक संसाधनों की कमी है।

पुस्तकालय बहुविषयक शिक्षा को भी प्रोत्साहित करते हैं, जो NEP 2020 का एक प्रमुख उद्देश्य है। पुस्तकालयों में विभिन्न विषयों की सामग्री उपलब्ध होती है, जिससे छात्र अपने मुख्य विषय के साथ-साथ अन्य विषयों का भी अध्ययन कर सकते हैं। इससे उनकी सोच का दायरा विस्तृत होता है और वे जटिल समस्याओं को बेहतर ढंग से समझने और हल करने में सक्षम बनते हैं।

शोध और नवाचार के क्षेत्र में भी पुस्तकालयों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। उच्च शिक्षा संस्थानों में पुस्तकालय शोधार्थियों को आवश्यक सामग्री, संदर्भ स्रोत और डिजिटल डेटाबेस उपलब्ध कराते हैं। इसके साथ ही, वे शोध नैतिकता, उद्धरण की विधि और प्लेगरिज्म से बचाव के बारे में मार्गदर्शन भी प्रदान करते हैं। इस प्रकार, पुस्तकालय शिक्षा और अनुसंधान की गुणवत्ता को बढ़ाने में सहायक होते हैं।

हालाँकि, NEP 2020 के उद्देश्यों को प्रभावी ढंग से लागू करने में पुस्तकालयों के सामने कई चुनौतियाँ भी हैं। इनमें वित्तीय संसाधनों की कमी, आधुनिक तकनीकी अवसंरचना का अभाव, प्रशिक्षित पुस्तकालयाध्यक्षों की कमी और ग्रामीण क्षेत्रों में डिजिटल सुविधाओं की सीमित उपलब्धता शामिल हैं। इन चुनौतियों के कारण पुस्तकालयों की सेवाएँ सभी तक समान रूप से नहीं पहुँच पातीं।

इन समस्याओं के समाधान के लिए आवश्यक है कि पुस्तकालयों को सशक्त बनाया जाए और उन्हें आधुनिक तकनीकों से जोड़ा जाए। सरकार और शैक्षणिक संस्थानों को पुस्तकालयों के विकास के लिए पर्याप्त संसाधन उपलब्ध कराने चाहिए। साथ ही, पुस्तकालयाध्यक्षों के लिए नियमित प्रशिक्षण और कौशल विकास कार्यक्रम आयोजित किए जाने चाहिए, ताकि वे डिजिटल युग की आवश्यकताओं के अनुरूप सेवाएँ प्रदान कर सकें।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में यह स्पष्ट है कि पुस्तकालय केवल सहायक संस्थान नहीं, बल्कि शिक्षा प्रणाली के केंद्रीय स्तंभ बन चुके हैं। वे छात्रों में आत्म-अध्ययन की प्रवृत्ति विकसित करते हैं, उन्हें ज्ञान के विभिन्न स्रोतों से जोड़ते हैं और जीवनपर्यंत सीखने की दिशा में प्रेरित करते हैं। NEP 2020 के लक्ष्यों को प्राप्त करने में पुस्तकालयों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है, और उनकी प्रभावशीलता पर ही शिक्षा की गुणवत्ता काफी हद तक निर्भर करती है।

अतः यह अध्ययन NEP 2020 के संदर्भ में पुस्तकालयों की भूमिका का विस्तृत विश्लेषण प्रस्तुत करता है। इसमें यह समझने का प्रयास किया गया है कि पुस्तकालय किस प्रकार शिक्षा के विभिन्न आयामों जैसे पठन संस्कृति, डिजिटल साक्षरता, बहुविषयक शिक्षा और शोधकृको सुदृढ़ करने में योगदान देते हैं। साथ ही, यह अध्ययन पुस्तकालयों के समक्ष उपस्थित चुनौतियों और उनके संभावित समाधानों पर भी प्रकाश डालता है, ताकि भविष्य में उन्हें और अधिक प्रभावी बनाया जा सके।

पुस्तकालय शिक्षा का एक अभिन्न अंग है, जो छात्रों और शिक्षकों को ज्ञान प्राप्त करने का अवसर प्रदान करते हैं। NEP 2020 में पुस्तकालयों को केवल सहायक संसाधन नहीं, बल्कि शिक्षा के सक्रिय केंद्र के रूप में देखा गया है।

NEP 2020 की प्रमुख विशेषताएँ

1. बहुविषयक शिक्षा
2. कौशल आधारित शिक्षण
3. डिजिटल शिक्षा का विस्तार
4. मातृभाषा में शिक्षा
5. समावेशी शिक्षा
6. पठन संस्कृति को बढ़ावा

NEP 2020 के संदर्भ में पुस्तकालयों की प्रमुख भूमिकाएँ

## 1. पठन संस्कृति का विकास

पुस्तकालय छात्रों में पढ़ने की आदत विकसित करते हैं। NEP 2020 में बच्चों में प्रारंभिक स्तर से ही पढ़ने की रुचि बढ़ाने पर बल दिया गया है। पुस्तकालय इस दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। National Education Policy 2020 में पठन संस्कृति (Reading Culture) के विकास को शिक्षा का एक महत्वपूर्ण आधार माना गया है। पठन केवल जानकारी प्राप्त करने का माध्यम नहीं, बल्कि यह व्यक्ति की सोच, कल्पनाशक्ति, भाषा कौशल और व्यक्तित्व विकास को भी प्रभावित करता है। इसी कारण विद्यालय स्तर से ही छात्रों में पढ़ने की आदत विकसित करना आवश्यक माना गया है, और इस दिशा में पुस्तकालयों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है।

पुस्तकालय छात्रों को विभिन्न प्रकार की पुस्तकें कृतकहानी, कविता, विज्ञान, इतिहास, सामान्य ज्ञान आदि—उपलब्ध कराते हैं, जिससे उनमें पढ़ने की रुचि उत्पन्न होती है। जब छात्रों को उनकी रुचि के अनुसार सामग्री मिलती

है, तो वे स्वेच्छा से पढ़ने के लिए प्रेरित होते हैं। यह प्रक्रिया न केवल उनके ज्ञान को बढ़ाती है, बल्कि उनकी भाषा दक्षता और समझने की क्षमता को भी सुदृढ़ करती है।

पठन संस्कृति के विकास में पुस्तकालय एक अनुकूल और प्रेरणादायक वातावरण प्रदान करते हैं। शांत और व्यवस्थित वातावरण में पढ़ने से छात्रों का ध्यान केंद्रित होता है और वे अध्ययन में अधिक रुचि लेते हैं। इसके अतिरिक्त, पुस्तकालय विभिन्न गतिविधियों जैसे पुस्तक प्रदर्शनी, कहानी वाचन, पठन प्रतियोगिता और पुस्तक समीक्षा कार्यक्रम का आयोजन करते हैं, जिससे छात्रों में पढ़ने के प्रति उत्साह बढ़ता है।

NEP 2020 विशेष रूप से प्रारंभिक शिक्षा स्तर पर पठन कौशल को मजबूत करने पर बल देती है। इस संदर्भ में पुस्तकालय बच्चों के लिए सरल और रोचक पुस्तकों की व्यवस्था करते हैं, जो उनकी उम्र और समझ के अनुरूप होती हैं। इससे बच्चों में पढ़ने की आदत बचपन से ही विकसित हो जाती है, जो आगे चलकर उनके शैक्षणिक और व्यक्तिगत विकास में सहायक होती है।

डिजिटल युग में पठन संस्कृति का स्वरूप भी बदल रहा है। अब ई-पुस्तकें, ऑडियोबुक और ऑनलाइन सामग्री के माध्यम से भी पढ़ने की आदत को बढ़ावा दिया जा रहा है। पुस्तकालय इन डिजिटल संसाधनों को उपलब्ध कराकर छात्रों को नई तकनीकों के साथ जोड़ते हैं और उन्हें आधुनिक पठन माध्यमों से परिचित कराते हैं।

अंततः, पठन संस्कृति का विकास शिक्षा की गुणवत्ता को बढ़ाने और ज्ञान के विस्तार के लिए अत्यंत आवश्यक है। इस दिशा में पुस्तकालयों की भूमिका एक प्रेरक और मार्गदर्शक के रूप में होती है, जो छात्रों को आजीवन सीखने के लिए प्रेरित करती है।

## 2. डिजिटल साक्षरता को बढ़ावा

डिजिटल युग में पुस्तकालय छात्रों को ई-लर्निंग, ऑनलाइन संसाधनों और तकनीकी उपकरणों के उपयोग के लिए सक्षम बनाते हैं। NEP 2020 के अनुसार आधुनिक शिक्षा प्रणाली में डिजिटल साक्षरता एक अनिवार्य कौशल बन चुकी है। डिजिटल साक्षरता का अर्थ केवल कंप्यूटर या इंटरनेट का उपयोग करना नहीं, बल्कि डिजिटल उपकरणों और ऑनलाइन संसाधनों का प्रभावी, सुरक्षित और नैतिक उपयोग करना भी है। इस दिशा में पुस्तकालयों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि वे छात्रों और शिक्षकों को डिजिटल संसाधनों तक पहुँच प्रदान करने के साथ-साथ उन्हें इनका सही उपयोग करना भी सिखाते हैं।

डिजिटल युग में शिक्षा का स्वरूप तेजी से ऑनलाइन और तकनीक-आधारित हो रहा है। ई-पुस्तकें, ई-जर्नल, ऑनलाइन डेटाबेस, वीडियो लेक्चर और ई-लर्निंग प्लेटफॉर्म जैसे संसाधन आज शिक्षा के महत्वपूर्ण अंग बन गए हैं। पुस्तकालय इन सभी डिजिटल संसाधनों को एक संगठित रूप में उपलब्ध कराते हैं, जिससे उपयोगकर्ता आसानी से आवश्यक जानकारी प्राप्त कर सकें। पुस्तकालयाध्यक्ष डिजिटल साक्षरता के विकास में प्रशिक्षक और को बढ़ावा देते हैं। NEP 2020 के अनुसार शिक्षा का एक प्रमुख उद्देश्य शोध और नवाचार को बढ़ावा देना है। इस दिशा में पुस्तकालयों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है, क्योंकि वे शोध कार्य के लिए आवश्यक ज्ञान और सूचना का प्रमुख स्रोत होते हैं। पुस्तकालय शोधार्थियों और विद्यार्थियों को विभिन्न प्रकार की सामग्री जैसे पुस्तकें, शोध पत्र, ई-जर्नल, ऑनलाइन डेटाबेस और डिजिटल रिपॉजिटरी उपलब्ध कराते हैं। इससे शोध कार्य के लिए प्रासंगिक और अद्यतन जानकारी प्राप्त करना आसान हो जाता है।

इसके अतिरिक्त, पुस्तकालयाध्यक्ष शोधकर्ताओं को सही स्रोतों की पहचान, संदर्भ की विधि, और शोध नैतिकता के बारे में मार्गदर्शन देते हैं। वे प्लेगरिज्म से बचाव के उपाय भी बताते हैं, जिससे शोध की गुणवत्ता और विश्वसनीयता बनी रहती है। डिजिटल युग में पुस्तकालय नवाचार को बढ़ावा देने के लिए ई-लर्निंग प्लेटफॉर्म, ओपन एक्सेस संसाधन और तकनीकी उपकरणों का उपयोग करते हैं।

अंततः, पुस्तकालय शोध और नवाचार के लिए एक मजबूत आधार प्रदान करते हैं, जो शिक्षा और समाज के विकास में महत्वपूर्ण योगदान देता है।

## 5. शिक्षक और छात्र के लिए संसाधन केंद्र

पुस्तकालय शिक्षकों को शिक्षण सामग्री और छात्रों को अध्ययन सामग्री प्रदान करते हैं। NEP 2020 के संदर्भ में पुस्तकालयों को केवल पुस्तकों के भंडार के रूप में नहीं, बल्कि शिक्षक और छात्र दोनों के लिए एक समग्र संसाधन केंद्र के रूप में देखा जाता है। पुस्तकालय शिक्षण और अधिगम प्रक्रिया को सुदृढ़ बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। शिक्षकों के लिए पुस्तकालय विभिन्न प्रकार की संदर्भ सामग्री, पाठ्य सामग्री, शोध लेख, और नवीन शिक्षण विधियों से संबंधित संसाधन उपलब्ध कराते हैं। इससे शिक्षक अपने पाठों को अधिक प्रभावी, रोचक और अद्यतन बना सकते हैं। वे पाठ योजना तैयार करने, विषय की गहराई समझने और नई शिक्षण तकनीकों

को अपनाने में पुस्तकालय की सहायता लेते हैं।

छात्रों के लिए पुस्तकालय पाठ्यपुस्तकों के साथ-साथ अतिरिक्त अध्ययन सामग्री, प्रतियोगी परीक्षाओं की पुस्तकें, सामान्य ज्ञान, और डिजिटल संसाधन उपलब्ध कराते हैं। इससे छात्रों को स्व-अध्ययन, मसॉ.जनकलद्ध और गहन अध्ययन का अवसर मिलता है। इसके अतिरिक्त, पुस्तकालय ई-संसाधन, ऑनलाइन डेटाबेस और डिजिटल प्लेटफॉर्म के माध्यम से दोनों के लिए सीखने के नए अवसर प्रदान करते हैं।

अंततः, पुस्तकालय एक प्रभावी संसाधन केंद्र के रूप में शिक्षा की गुणवत्ता को बढ़ाने और शिक्षक-छात्र दोनों के ज्ञान को समृद्ध करने में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं।

## 6. समावेशी शिक्षा में योगदान

पुस्तकालय सभी वर्गों के छात्रों को समान अवसर प्रदान करते हैं। NEP 2020 में समावेशी शिक्षा को विशेष महत्व दिया गया है, जिसका उद्देश्य सभी वर्गों को जैसे आर्थिक रूप से कमजोर, ग्रामीण, दिव्यांग और वंचित समूहों को समान शैक्षणिक अवसर प्रदान करना है। इस दिशा में पुस्तकालयों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि वे सभी के लिए समान रूप से ज्ञान और सूचना के द्वार खोलते हैं।

पुस्तकालय विविध प्रकार की सामग्री कृसरल भाषा की पुस्तकें, ब्रेल सामग्री, ऑडियोबुक, और डिजिटल संसाधन उपलब्ध कराते हैं, जिससे विभिन्न पृष्ठभूमि के छात्र अपनी सुविधा के अनुसार अध्ययन कर सकें। विशेष रूप से दिव्यांग छात्रों के लिए सहायक तकनीकों का उपयोग पुस्तकालयों को अधिक सुलभ और उपयोगी बनाता है। इसके अतिरिक्त, पुस्तकालय आर्थिक रूप से कमजोर छात्रों को निःशुल्क या कम लागत पर अध्ययन सामग्री उपलब्ध कराकर शिक्षा में समानता को बढ़ावा देते हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में पुस्तकालय डिजिटल सुविधाएँ प्रदान कर डिजिटल विभाजन को कम करने में भी सहायता करते हैं।

अंततः, पुस्तकालय समावेशी शिक्षा को सशक्त बनाते हैं और यह सुनिश्चित करते हैं कि हर छात्र को सीखने और आगे बढ़ने का समान अवसर प्राप्त हो।

पुस्तकालयों के प्रकार और उनकी भूमिका

1. विद्यालय पुस्तकालय
2. महाविद्यालय पुस्तकालय
3. डिजिटल पुस्तकालय
4. चुनौतियाँ
5. संसाधनों की कमी
6. तकनीकी अवसंरचना का अभाव
7. प्रशिक्षित स्टाफ की कमी
8. ग्रामीण क्षेत्रों में डिजिटल सुविधा का अभाव
9. समाधान
10. डिजिटल लाइब्रेरी का विकास
11. प्रशिक्षण कार्यक्रम
12. सरकारी सहायता
13. ICT का उपयोग

भविष्य की संभावनाएँ

भविष्य में पुस्तकालय और अधिक डिजिटल और तकनीकी होंगे। AI, डिजिटल प्लेटफॉर्म और ई-लर्निंग के माध्यम से शिक्षा और अधिक सुलभ होगी।

## निष्कर्ष—

NEP 2020 के अनुसार पुस्तकालय शिक्षा प्रणाली का महत्वपूर्ण स्तंभ है। वे ज्ञान के प्रसार, पठन संस्कृति और डिजिटल साक्षरता को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। NEP 2020 के संदर्भ में यह स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है कि पुस्तकालय शिक्षा प्रणाली के एक अत्यंत महत्वपूर्ण और अनिवार्य घटक के रूप में उभरकर सामने आए हैं। वे केवल पुस्तकों के संग्रह तक सीमित नहीं हैं, बल्कि ज्ञान, सूचना और अधिगम के सक्रिय केंद्र बन चुके हैं, जो शिक्षण-प्रक्रिया को अधिक प्रभावी और समृद्ध बनाते हैं।

NEP 2020 के प्रमुख उद्देश्यों जैसे पठन संस्कृति का विकास, डिजिटल साक्षरता को बढ़ावा, बहुविषयक शिक्षा,

शोध और नवाचार, तथा समावेशी शिक्षाकृती प्राप्ति में पुस्तकालयों की भूमिका केंद्रीय है। पुस्तकालय छात्रों और शिक्षकों को आवश्यक संसाधन उपलब्ध कराकर उनके ज्ञान, कौशल और रचनात्मकता को विकसित करने में सहायता करते हैं। डिजिटल युग में पुस्तकालयों ने अपनी सेवाओं को आधुनिक तकनीकों के साथ जोड़कर शिक्षा को अधिक सुलभ और व्यापक बनाया है।

हालाँकि, पुस्तकालयों के सामने कई चुनौतियाँ भी हैं, जैसे— डिजिटल अवसंरचना की कमी, वित्तीय संसाधनों का अभाव, और प्रशिक्षित मानव संसाधन की कमी। इन चुनौतियों को दूर करने के लिए आवश्यक है कि पुस्तकालयों को सशक्त बनाया जाए, उन्हें आधुनिक तकनीकों से सुसज्जित किया जाए और पुस्तकालयाध्यक्षों के कौशल विकास पर विशेष ध्यान दिया जाए।

अंततः, यह कहा जा सकता है कि यदि पुस्तकालयों का प्रभावी विकास और उपयोग किया जाए, तो वे छम्ह 2020 के उद्देश्यों को सफलतापूर्वक पूरा करने में महत्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं। इस प्रकार, पुस्तकालय शिक्षा के क्षेत्र में परिवर्तन और प्रगति के सशक्त माध्यम के रूप में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते रहेंगे।

### Author's Declaration:

I/We, the author(s)/co-author(s), declare that the entire content, views, analysis, and conclusions of this article are solely my/our own. I/We take full responsibility, individually and collectively, for any errors, omissions, ethical misconduct, copyright violations, plagiarism, defamation, misrepresentation, or any legal consequences arising now or in the future. The publisher, editors, and reviewers shall not be held responsible or liable in any way for any legal, ethical, financial, or reputational claims related to this article. All responsibility rests solely with the author(s)/co-author(s), jointly and severally. I/We further affirm that there is no conflict of interest financial, personal, academic, or professional regarding the subject, findings, or publication of this article.

### संदर्भ—

1. National Education Policy 2020
2. UGC Guidelines
3. IGNOU Study Material
4. NDLI Resources
5. National Education Policy 2020
6. University Grants Commission (UGC). (2020). Higher Education Guidelines.
7. IGNOU. (2019). Library and Information Science Study Material.
8. National Digital Library of India (NDLI). (2022). Digital Resources.
9. INFLIBNET Centre. (2021). E-ShodhSindhu Consortium.
10. DELNET. (2020). Library Network Services.
11. International Federation of Library Associations and Institutions. (2019). Guidelines for Libraries.
12. American Library Association. (2020). Information Literacy Standards.
13. UNESCO. (2020). Education Report.
14. NCERT. (2020). School Education Framework.
15. NISCAIR. (2019). Science Information Services.
16. Ranganathan, S. R. (1961). The Five Laws of Library Science.
17. Kumar, P. (2020). Library Science in Digital Era.
18. Singh, R. (2019). Digital Libraries and Information Services.
19. Sharma, M. (2021). Role of Librarians in Modern Age.
20. Verma, S. (2018). Information Technology in Libraries.

### Cite this Article

'शशि कुमार', "NEP 2020 के संदर्भ में पुस्तकालयों की भूमिका", Research Vidyapith International Multidisciplinary Journal, ISSN: 3048-7331 (Online), Volume:3, Issue:1, January 2026.

"Copyright © 2026 The Author(s). This work is licensed under Creative Commons Attribution 4.0 (CC-BY), allowing others to use, share, modify, and distribute it with proper credit to the author."